अगस्त 2017

# सामान्य ज्ञान दर्पण

## इस अंक में...


9 सफलता आकस्मिक घटना नहीं....

**विशेष स्तम्भ**

10 समसामयिक सामान्य ज्ञान
15 आर्थिक परिदृश्य
20 प्रमुख नियुक्तियाँ
21 राष्ट्रीय परिदृश्य
27 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
32 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 विज्ञान समाचार
37 युवा प्रतिभाएं
41 सारभूत तत्व कोष

**लेख**

45 प्रौद्योगिकी लेख—ज्ञान के साइबर माध्यम
46 सामयिक लेख—भुगतान प्रणाली में क्रान्ति : यूनिफाइड पेमेण्ट इंटरफेस
47 साहित्यिक लेख—हिन्दी भाषा में अनुस्वार का प्रयोग
50 टेक्नोलॉजी लेख—नैनो तकनीक
52 कृषि लेख—कृषि क्षेत्र में परम्परागत एवं आधुनिक खेती के उन्नत तरीके
54 गणितीय लेख—काम और समय

**हल प्रश्न-पत्र**

57 रेलवे भर्ती बोर्ड गैर-तकनीकी (एनटीपीसी) परीक्षा, 2016
65 मध्य प्रदेश पुलिस सब-इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा, 2016
77 उत्तराखण्ड अध्यापक पात्रता परीक्षा, 2016 (कक्षा VI से VIII तक)
89 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल (10+2) प्रथम चरण परीक्षा, 2016
96 मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक (जनरल ड्यूटी) भर्ती परीक्षा, 2016
103 आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक लिपिकीय संवर्ग (बहुउद्देशीय) प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

**विविध/सामान्य**

111 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड, सहायक स्टेशन मास्टर परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न-मनोवैज्ञानिक एवं अभिरुचि परीक्षण
114 वार्षिक रिपोर्ट 2016-17—कृषि क्षेत्र में अनुसंधान, विकास एवं नई स्कीम्स/प्रोग्राम्स के बढ़ते चरण-एक दृष्टि में
117 क्या आप परिचित हैं ?
118 वार्षिकी : अगस्त 2016–जुलाई 2017 अंक तक
129 रोजगार समाचार


सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

# सफलता आकस्मिक घटना नहीं...

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

चाहे हमने बचपन से कितनी ही बार सुन रखा हो कि—Slow and steady wins the race. धैर्य से सतत् चलने वाला जीत जाता है, फिर भी हम सबकी चाहत 'जल्द ही जीत' हासिल करने की होती है. हम सब रातोंरात अमीर हो जाना चाहते हैं. चुटकी भर प्रयास में ही सफलता के शिखर पर पहुँच जाना चाहते हैं. थोड़ासा चलकर ही बहुत यश-मान पाना चाहते हैं. सफलता को मिनटों में हासिल कर लेने की यह चाहत भला कितनी उचित है और इस चाहत के दुष्परिणाम क्या-क्या हो सकते हैं, आओ जरा इस पर भी गौर कर लें ?

एक बार एक युवक को संघर्ष करते-करते कई वर्ष हो गए, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली. वह काफी निराश हो गया और नकारात्मक विचारों ने उसे घेर लिया. उसने इस कदर उम्मीद खो दी कि उसने आत्म-हत्या करने तक का मन बना लिया. वह एकान्त जंगल में आत्महत्या करने को ही जा रहा था कि अचानक एक सन्त ने उसे देख लिया. सन्त ने उससे कहा—क्या बात है बेटा ! तुम इस घनघोर जंगल में अकेले क्या करने आए हो ?

उस युवक ने कहा—मैं अपने जीवन में संघर्ष करते-करते थक गया हूँ और अब मैं आत्महत्या करके अपने इस बेकार जीवन को नष्ट कर देना चाहता हूँ. इसीलिए यहाँ अकेले आया हूँ. सन्त ने पूछा तुम कितने दिनों से संघर्ष कर रहे हो ? उस युवक ने कहा—मुझे पूरे दो वर्ष हो गए हैं, न तो कहीं नौकरी (Job) लगी और न ही किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफल हो सका हूँ. सन्त ने कहा—तुम्हें नौकरी भी मिल जाएगी और तुम सफल भी हो जाओगे. निराश न होंगे, कुछ दिन और प्रयास करो. युवक ने कहा—मैं किसी भी काम के योग्य नहीं हूँ, अब मुझसे कुछ नहीं होगा. जब सन्त ने देखा कि यह युवक बिलकुल हिम्मत हार चुका है, तो उन्होंने उसे एक कहानी सुनाई.

"एक बार एक बच्चे ने दो पौधे लगाए, एक बाँस का और एक फर्न का (नागफनी, कैक्टस, पत्तियों वाला). फर्न वाले पौधे में तो कुछ ही दिनों में पत्तियाँ निकल आई और फर्न का पौधा एक साल में काफी बढ़ भी गया, परन्तु बाँस के पौधे में साल भर में कुछ भी नहीं हुआ, लेकिन बच्चा निराश नहीं हुआ. दूसरे वर्ष में भी बाँस के पौधे में कुछ नहीं हुआ, लेकिन फर्न का पौधा और बढ़ गया. बच्चे ने फिर भी निराशा नहीं दिखाई. तीसरे वर्ष और चौथे वर्ष भी बाँस का पौधा वैसा ही रहा, लेकिन फर्न का पौधा और बड़ा हो गया. बच्चा फिर भी निराश नहीं हुआ. फिर कुछ दिनों बाद बाँस के पौधे में अंकुर फूटे और देखते-देखते कुछ ही दिनों में बाँस का पेड़ काफी ऊँचा हो गया. बाँस के पेड़ को अपनी जड़ों को मजबूत करने में चार-पाँच साल लग गए. सन्त ने युवक से कहा कि यह आपका संघर्ष का समय अपनी जड़ें मजबूत करने का समय है. आप इस समय को व्यर्थ नहीं समझो एवं निराश हताश न बनो. आत्महत्या करने की, मरने की न सोचो. जल्दबाजी न करो. जैसे ही आपकी जड़ें मजबूत, परिपक्व हो जाएंगी, आपकी सफलता आपके समक्ष होगी, आपकी आज की समस्याएं तिरोहित हो जाएंगी. आप धैर्यपूर्वक आत्मविश्वास को व लक्ष्य के प्रति निष्ठा को बनाए रखें, समय आने पर आप बाँस के पेड़ की तरह बहुत ऊँचे हो जाओगे. सफलता की बुलंदियों पर पहुचोगे. सन्त की बातें युवक के ज़ेहन में उतरती गईं और वह पुनः जीवन पथ पर गतिमान हो गया.